२१. और जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं उन्होंने कहा कि हम पर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे जाते? या हम (अपनी आंखों से) अपने रब को देख लेते? उन लोगों ने ख़ुद अपने को ही बहुत बड़ा समझ रखा है और बहुत नाफ़रमानी कर ली है।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْمَلَائِكَةُ أَوْ نَرَىٰ رَبَّنَا ۗ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيرًا (21)

२२. जिस दिन ये फ़रिश्तों को देख लेंगे उस दिन इन पापियों को कोई ख़ुशी नहीं होगी[1] और कहेंगे कि ये वंचित (महरूम) ही वंचित किये गये।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حِجْرًا مَّحْجُورًا (22)

२३. और उन्होंने जो-जो अमल किये थे हम ने उन की तरफ़ बढ़ कर उन्हें कणों (ज़र्रा) की तरह तहस-नहस कर दिया।

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنثُورًا (23)

२४. (लेकिन) उस दिन जन्नत में रहने वालों की जगह बहुत अच्छी होगी और ख़्वाबगाह भी सुखद होगा।[2]

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا (24)

२५. और जिस दिन आकाश बादल सहित फट जायेगा और फ़रिश्ते लगातार उतारे जायेंगे।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنزِيلًا (25)

२६. उस दिन उचित (सहीह) रूप से मुल्क केवल रहमान का ही होगा और यह दिन काफ़िरों पर बड़ा भारी होगा।

الْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَٰنِ ۚ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا (26)

२७. और उस दिन ज़ालिम अपने हाथों को चबा-चबा कर कहेगा कि हाय! अच्छा होता अगर मैंने रसूल का रास्ता अपनाया होता।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا (27)

[1] उस दिन से मुराद मौत का दिन है, यानी यह काफ़िर फ़रिश्तों को देखने की तमन्ना करते हैं, लेकिन मौत के वक़्त फ़रिश्तों को देखेंगे तो उन के लिए कोई ख़ुशी और शुभ नहीं होगा।

[2] कुछ ने इस से यह मतलब निकाला है कि ईमानवालों के लिए क़यामत का यह भयानक दिन इतना कम और उनका हिसाब इतना आसान होगा कि दोपहर तक यह आज़ाद हो जायेंगे और जन्नत में यह अपने परिवार वालों और हूरों के साथ दोपहर में आराम कर रहे होंगे, जिस तरह हदीस में है कि ईमानवालों के लिए वह दिन इतना आसान होगा कि जितने में दुनिया में एक फ़र्ज़ नमाज़ अदा कर लेना। (मुसनद अहमद, हिस्सा ४, पेज ७५)

يَٰوَيْلَتَىٰ لَيْتَنِى لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا (28)

२८. हाय अफ़सोस! काश मैंने फ़्लाँ को दोस्त न बनाया होता।[1]

لَّقَدْ أَضَلَّنِى عَنِ ٱلذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَآءَنِى ۗ وَكَانَ ٱلشَّيْطَٰنُ لِلْإِنسَٰنِ خَذُولًا (29)

२९. उस ने तो मुझे उस के बाद भटका दिया कि नसीहत मेरे पास आ पहुँची थी और शैतान तो इंसान को (वक़्त पर) धोखा देने वाला है।

وَقَالَ ٱلرَّسُولُ يَٰرَبِّ إِنَّ قَوْمِى ٱتَّخَذُوا۟ هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ مَهْجُورًا (30)

३०. और रसूल कहेगा कि हे मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ ٱلْمُجْرِمِينَ ۗ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا (31)

३१. और इस तरह हम ने हर नबी के दुश्मन कुछ मुजरिमों को बना दिया है, और तेरा रब ही हिदायत देने वाला और मदद करने वाला काफ़ी है।

وَقَالَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ ٱلْقُرْءَانُ جُمْلَةً وَٰحِدَةً ۚ كَذَٰلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِۦ فُؤَادَكَ ۖ وَرَتَّلْنَٰهُ تَرْتِيلًا (32)

३२. और काफ़िरों ने कहा कि उस पर पूरा क़ुरआन एक साथ ही क्यों न उतारा गया? इसी तरह (हम ने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा) ताकि इस से हम आप के दिल को मज़बूती अता करें, और हम ने उसे ठहर-ठहर कर ही पढ़ सुनाया है।

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَٰكَ بِٱلْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا (33)

३३. और ये आप के पास जो कोई भी मिसाल लेकर आयेंगे हम उस का सच जवाब और ठीक तफ़सीर बता देंगे।[2]

ٱلَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُو۟لَٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا (34)

३४. जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ़ जमा किये जायेंगे, वही बुरी जगह वाले और भटके हुए रास्ते वाले हैं।

[1] इस से मालूम हुआ कि अल्लाह के नाफ़रमानों से रिश्ता और दोस्ती नहीं रखनी चाहिए, इसलिए कि सज्जन इंसान की संगत से इंसान सज्जन और बुरे इंसान की संगत इंसान को बुरा बनाती है।

[2] यह क़ुरआन को ठहर-ठहर कर उतारे जाने की नीति (हिक्मत) और वजह को बयान किया जा रहा है कि ये मूर्तिपूजक जब भी कोई मिसाल या मुश्किल और शक पेश करेंगे तो क़ुरआन के ज़रिये हम उस का जवाब या वज़ाहत पेश करेंगे और इस तरह उन्हें लोगों को भटकाने का मौक़ा नहीं मिलेगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿35﴾

३५. और बेशक हम ने मूसा को किताब दी और उन के साथ उन के भाई हारून को उनका सहायक (वज़ीर) बनाया।

فَقُلْنَا اذْهَبَاۤ اِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿36﴾

३६. और कह दिया कि तुम दोनों उन लोगों की तरफ़ जाओ जो हमारी निशानियों को झुठला रहे हैं, फिर हम ने उन्हें बिल्कुल ही हलाक (ध्वस्त) कर दिया।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ اَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَاَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿37﴾

३७. और नूह की क़ौम ने भी जब रसूलों को झूठा कहा तो हम ने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें शिक्षा (इबरत) हासिल करने का प्रतीक (मज़हर) बना दिया और हम ने ज़ालिमों के लिए सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿38﴾

३८. और 'आद' जाति और 'समूद' जाति और कुयें वालों को[1] और उन के बीच के बहुत से सम्प्रदाय (फ़िर्क़ों) को (नाश कर दिया)।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْاَمْثَالَ ؗ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا ﴿39﴾

३९. और हम ने हर एक के सामने मिसालों को बयान किया, फिर हर एक को पूरी तरह से नाश कर दिया।

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْۤ اُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ﴿40﴾

४०. और ये लोग उस बस्ती के पास से भी आते-जाते हैं जिन पर बुरी तरह की बारिश की गयी,[2] क्या यह फिर भी उसे देखते नहीं? हक़ीक़त यह है कि उन्हें मरकर दोबारा ज़िन्दा होकर खड़े होने पर यक़ीन ही नहीं।

[1] رس का मतलब है कुआँ, أصحاب الرس का मतलब हुआ कुएँ वाले। इस के निर्धारण (ताईन) में मुफ़स्सिरों में इख़्तिलाफ़ है, इमाम इब्ने जरीर तबरी ने कहा है, इस से मुराद खाई वाले हैं, जिनका बयान सूरः अल-बुरूज में है। (इब्ने कसीर)

[2] बस्ती से लूत की क़ौम की बस्तियाँ सदूम और अमूरा वग़ैरह मुराद हैं और बुरी बारिश से पत्थरों की बारिश मुराद है, इन बस्तियों को उलट दिया गया था, उस के बाद उन के ऊपर कंकड़-पत्थर की बारिश की गई थी, जैसाकि सूरः हूद-८२ में बयान किया गया है, ये बस्तियाँ सीरिया और फ़िलिस्तीन के रास्ते में पड़ती हैं, जिन से गुज़र कर मक्कावासी आते-जाते थे।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ﴿41﴾

४१. और तुम्हें जब कभी देखते हैं तो तुम से मज़ाक करने लगते हैं, कि क्या यही वह इंसान है जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।

إِن كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ آلِهَتِنَا لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿42﴾

४२. (वह तो कहिए) कि हम डटे रहे नहीं तो इन्होंने तो हमें हमारे देवताओं (माबूदों) से भटका देने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, और जब ये अज़ाबों को देखेंगे तो उन्हें वाज़ेह तौर से मालूम हो जायेगा कि पूरी तरह से रास्ते से भटका हुआ कौन था?

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ﴿43﴾

४३. क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख़्वाहिशात को अपना देवता बनाये हुए है, क्या आप उस के ज़िम्मेदार हो सकते हैं।

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۚ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ ۖ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿44﴾

४४. क्या आप इसी सोंच में हैं कि उन में से ज़्यादातर सुनते या समझते हैं, वह तो निरे जानवर की तरह हैं, बल्कि उन से भी ज़्यादा भटके हुए।[1]

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ﴿45﴾

४५. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के रब ने छाया को किस प्रकार वसीअ (विस्तृत) कर दिया है?[2] अगर चाहता तो उसे ठहरा हुआ कर देता, फिर हम ने सूरज को उस पर दलील बनाया।

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ﴿46﴾

४६. फिर हम ने उसे धीर-धीरे अपनी तरफ़ खींच लिया।

---

[1] यानी ये चौपाये जिस मक़सद के लिए पैदा किये गये हैं, उसे वे समझते हैं। लेकिन इंसान जिसे एक अल्लाह की इबादत के लिए पैदा किया गया था, वह रसूलों के बाख़बर कर देने के बावजूद अल्लाह के साथ शिर्क करता है और दर-दर पर अपना माथा टेकता फिरता है, इस बिना पर ये बेशक चौपाये से भी ज़्यादा बुरे और भटके हुए हैं।

[2] यहाँ से दोबारा तौहीद के दलायल शुरू होते हैं। देखो, अल्लाह तआला ने दुनिया में किस तरह छाया फैलायी है जो सुबह के बाद से सूरज के निकलने तक रहती है, यानी उस वक़्त धूप नहीं होती धूप के साथ यह सिमटना और सिकुड़ना शुरू हो जाता है।

४७. और वही है जिस ने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया और नींद सुखमय बनायी, और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ﴿47﴾

४८. और वही है जो रहमत (कृपा) की बारिश से पहले ख़ुशख़बरी देने वाली हवा को भेजता है और हम आकाश से पाक पानी बरसाते हैं।

وَهُوَ الَّذِيٓ أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُورًا ﴿48﴾

४९. ताकि उस के जरिये मरे हुए नगर को ज़िन्दा कर दें और उसे हम अपनी मख़लूक़ में से बहुत से जानवरों और इंसानों को पिलाते हैं।

لِّنُحْيِۦ بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا وَنُسْقِيَهُۥ مِمَّا خَلَقْنَآ أَنْعٰمًا وَأَنَاسِيَّ كَثِيرًا ﴿49﴾

५०. और बेशक हम ने इसे उन के बीच कई तरह से बयान किया ताकि वह नसीहत हासिल करें, लेकिन फिर भी ज़्यादातर लोगों ने नाशुक्री के सिवाय माना नहीं।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا فَأَبَىٰٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿50﴾

५१. और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيرًا ﴿51﴾

५२. तो आप काफ़िरों का कहना न करें और क़ुरआन के जरिये उन से पूरी ताक़त से महा धर्मयुद्ध (जिहाद) करें।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِينَ وَجٰهِدْهُم بِهِۦ جِهَادًا كَبِيرًا ﴿52﴾

५३. और वही है जिस ने दो समुद्रों को आपस में मिला रखा है, यह है मीठा मज़ेदार और यह है खारी कड़ुवा,[1] और इन दोनों के बीच एक पर्दा और मज़बूत ओट कर दी।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَحِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿53﴾

५४. और वह है वही जिस ने पानी से इंसान को पैदा किया, फिर उसे वंश वाला और ससुराली रिश्तों वाला कर दिया।[2] बेशक आप

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُۥ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿54﴾

---

[1] मीठे पानी को فُرات कहते है, فُرات का मतलब है काट देना, तोड़ देना, मीठा पानी प्यास को काटता है यानी ख़त्म कर देता है, أُجاج बहुत खारी या कड़ुवा पानी।

[2] वंश (नसब) से मुराद वह रिश्ता है, जो माता-पिता की तरफ़ से हो, और صهر से मुराद वह क़रीबी रिश्ता हैं जो विवाह के बाद बीवी की तरफ़ से हो, जिस को हमारे समाज में ससुराली रिश्ता कहा जाता है। इन दोनों रिश्तों का बयान सूर: अन-निसा-२३ और सूर: अन-निसा-२२

का रब हर चीज़ पर क़ादिर है।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ﴿55﴾

५५. और यह अल्लाह को छोड़ कर उन की इबादत करते हैं, जो न तो उन्हें कोई फ़ायेदा पहुँचा सकें न कोई नुक़सान पहुँचा सकें, काफ़िर तो है ही अपने रब के ख़िलाफ़ (शैतान) की मदद करने वाला।

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿56﴾

५६. और हम ने तो आप को ख़ुशख़बरी और डर (त्रासिक) सुनाने वाला (नबी) बना कर भेजा है।

قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿57﴾

५७. कह दीजिए कि मैं (क़ुरआन के पहुँचाने पर) तुम से कोई उजरत नहीं चाहता लेकिन जो इंसान अपने रब की तरफ़ रास्ता पकड़ना चाहे।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ۗ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ﴿58﴾

५८. और उस हमेशा रहने वाले अल्लाह (तआला) पर पूरा यक़ीन करें जिसे कभी मौत नहीं, और उसकी तारीफ़ के साथ पवित्रता (तस्बीह) का बयान करते रहें, वह अपने बंदों के गुनाहों को अच्छी तरह जानता है।

اِلَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْـَٔلْ بِهٖ خَبِيْرًا ﴿59﴾

५९. वही है जिस ने आकाशों और धरती और उनके बीच की चीज़ों को छः दिन में पैदा कर दिया, फिर अर्श पर बुलन्द हुआ, वह रहमान है, आप उस के बारे में किसी जानकार से पूछ लें।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ﴿60﴾

६०. और उन से जब भी कहा जाता है कि दयालु (रहमान) को सज्दा करो, तो वे कहते हैं कि रहमान है क्या? क्या हम उस को सज्दा करें जिस का तू हमें हुक्म दे रहा है और (इस दावत से) उन की नफ़रत ही बढ़ती है।

में बयान किया गया है, और एक ही औरत से दो के दूध पीने से जो रिश्ता होता है, हदीस के ऐतबार से वह वंशीय सम्बन्धों (नसबी रिश्तों) में शामिल है।

६१. बहुत बाबरकत (शुभ) है वह जिस ने आसमान में बुर्ज बनाये और उस में सूरज बनाया, और रौशन चाँद भी।

تَبٰرَكَ الَّذِیْ جَعَلَ فِی السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِیْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِیْرًا ﴿61﴾

६२. और उसी ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया, उस इंसान की नसीहत के लिए जो नसीहत हासिल करने या शुक्रिया अदा करने का इरादा रखता हो।

وَهُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ یَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿62﴾

६३. और रहमान (दयालु) के सच्चे बंदे वह हैं जो धरती पर नरमी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से बातें करने लगते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है।[1]

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِیْنَ یَمْشُوْنَ عَلَی الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿63﴾

६४. और जो अपने रब के सामने सज्दा करते और खड़े होकर रात गुज़ारते हैं।

وَالَّذِیْنَ یَبِیْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِیَامًا ﴿64﴾

६५. और जो ये दुआयें (विनय) करते हैं कि हे हमारे रब! हम से नरक (जहन्नम) का अज़ाब दूर ही रख क्योंकि उसका अज़ाब चिमट जाने वाला है।[2]

وَالَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿65﴾

६६. वह स्थाई (मुस्तक़िल) जगह और रहने के ऐतबार से बुरी जगह है।

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿66﴾

६७. और जो ख़र्च करते वक़्त भी न तो इसराफ़ करते हैं, न कंजूसी, बल्कि इन दोनों के बीच का दरमियानी रास्ता होता है।

وَالَّذِیْنَ اِذَاۤ اَنْفَقُوْا لَمْ یُسْرِفُوْا وَلَمْ یَقْتُرُوْا وَكَانَ بَیْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿67﴾

---

[1] सलाम से मुराद यहाँ मुँह मोड़ना और विवाद को छोड़ देना है, यानी ईमानवाले जाहिल लोगों और कटबहस करने वालों से उलझते नहीं, बल्कि ऐसे मौक़े पर टाल जाते हैं और उन से बचने की कोशिश करते हैं और बिना फ़ायदे के बहस नहीं करते।

[2] इस से मालूम हुआ कि दयालु (रहमान) अल्लाह के बंदे वह हैं जो एक तरफ़ रातों को जागकर अल्लाह की इबादत करते हैं और दूसरी तरफ़ डरते भी हैं कि कहीं किसी ग़लती या सुस्ती की वजह से अल्लाह की पकड़ में न आ जायें इसीलिए वे नरक के अज़ाब से छुटकारा माँगते हैं। यानी अल्लाह की इबादत और आज्ञाकारिता (इताअत) पर किसी तरह का गर्व और घमण्ड नहीं होना चाहिए।

६८. और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता (माबूद) को नहीं पुकारते और किसी ऐसे इंसान को जिस का क़त्ल करना अल्लाह तआला ने हराम किया हो, सिवाय हक़ के वह क़त्ल नहीं करते न वह बदकार होते हैं[1] और जो कोई यह अमल करे वह अपने ऊपर कड़ी यातना (वबाल) लेगा।

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ﴿68﴾

६९. उसे क़यामत के दिन दुगुना अज़ाब दिया जायेगा और वह अपमान और अनादर (रुसवाई) के साथ हमेशा वहीं रहेगा।

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ﴿69﴾

७०. उन लोगों के सिवाय जो माफ़ी माँग लें और ईमान लायें और नेक काम करें[2] ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह (तआला) नेकी में बदल देता है, अल्लाह तआला बड़ा बख़्शने वाला और रहम करने वाला है।

إِلَّا مَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿70﴾

७१. और जो इंसान माफ़ी माँग ले और नेकी के काम करे तो वह हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) की तरफ़ सच्ची प्रवृत्ति (झुकाव) रखता है।

وَمَن تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ﴿71﴾

---

[1] हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया गया, कौन सा गुनाह सब से बड़ा है? आप ﷺ ने फ़रमाया: यह कि तू अल्लाह के साथ किसी को शामिल करे, जबकि हक़ीक़त में उस ने तुझे पैदा किया, उस ने पूछा कि उस के बाद कौन सा बड़ा गुनाह है? फ़रमाया अपनी औलाद को इस डर से क़त्ल करना कि वह तेरे साथ खायेगी। उस ने पूछा फिर कौन सा? आप ﷺ ने फ़रमाया यह कि तू अपने पड़ोसी की बीवी से व्याभिचार (ज़िना) करे। फिर आप ﷺ ने फ़रमाया कि इन बातों की तसदीक़ इस आयत से होती है। फिर आप ﷺ ने इसी आयत को पढ़ा। (अल-बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-बक़र:, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु कौनिश-शिर्के अक़बहुज़ ज़ुनूब)

[2] इस से मालूम हुआ कि दुनिया में साफ़ मन से माफ़ी माँगने से हर गुनाह से माफ़ी मिल सकती है, चाहे वह कितना बड़ा हो।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿72﴾

७२. और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते,[1] और जब वे किसी व्यर्थ (लग्व) के क़रीब से गुज़रते हैं तो इज़्ज़त से गुज़र जाते हैं।[2]

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ﴿73﴾

७३. और जब उन्हें उन के रब (के क़ौल और वादे) की आयतें सुनाई जाती हैं तो वे अंधे-बहरे होकर उन पर नहीं गिरते।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿74﴾

७४. और वह यह दुआ (विनय) करते हैं कि हे हमारे रब! तू हमें हमारी पत्नियों और सन्तानों से आँखों को ठंडक अता कर और हमें परहेज़गारों का अगुवा बना दे।

أُولَٰئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ﴿75﴾

७५. यही वे लोग हैं जिन्हें उन के सब्र (सहन) के बदले (जन्नत की ऊँची) अटारियाँ अता की जायेंगी, जहाँ उन्हें आशीर्वाद और सलाम पहुँचाया जायेगा।

خَالِدِينَ فِيهَا ۚ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿76﴾

७६. इस में वे हमेशा रहेंगे, वह बहुत ही अच्छी जगह और आराम की जगह है।

قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ﴿77﴾

७७. कह दीजिए! अगर तुम्हारी नर्म दुआ (प्रार्थना) न होती तो मेरा रब तुम्हारी कभी फ़िक्र न करता, तुम तो झुठला चुके अब जल्द ही उसकी सज़ा तुम्हें चिमट जाने वाली होगी।

---

[1] زور (ज़ूर) का मतलब है झूठ। हर झूठी चीज़ भी झूठ है, इसीलिए झूठी गवाही से लेकर कुफ़्र, शिर्क और हर तरह की गलत बातें जैसे खेल-कूद, गाना और दूसरे बेकार रीति-रिवाज इसी में शामिल है और अल्लाह की इबादत करने वालों की यह भी विशेषता (ख़ुसूसियत) है कि वे किसी भी झूठ में और झूठी सभा में उपस्थिति (हाज़िर) नहीं होते।

[2] बेकार (व्यर्थ) हर वह बात और काम है जिस में धर्मानुसार कोई फ़ायेदा न हो, यानी ऐसे कामों और बातों में भी वह हिस्सा नहीं लेते बल्कि शान्ति (ख़ामोशी) के साथ और इज़्ज़त के साथ निकल जाते हैं।

सूरतुश्शुअरा-२६

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

सूर: शुअरा मक्का में नाज़िल हुई और इस में दो सौ सत्ताईस आयतें और ग्यारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. ता॰सीन॰मीम॰

طٰسٓمٓ ﴿1﴾

२. ये आयतें रौशन किताब की हैं।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

३. उन के ईमान न लाने पर शायद आप तो अपना प्राण (जान) त्याग देंगे।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿3﴾

४. अगर हम चाहते तो उन पर आकाश से कोई ऐसी निशानी उतारते कि जिस के सामने उन की गर्दनें झुक जातीं।

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿4﴾

५. और उन के पास रहमान की तरफ से जो भी नई शिक्षायें (नसीहतें) आयीं यह उस से मुंह फेरने वाले बन गये।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ﴿5﴾

६. उन लोगों ने झुठलाया है अब उन के पास जल्द ही उसकी खबरें आ जायेंगी, जिस के साथ वे मज़ाक कर रहे हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿6﴾

७. क्या उन्होंने धरती की तरफ नहीं देखा? कि हम ने उसमें हर तरह के ख़ूबसूरत जोड़े कितने उगाये हैं।

اَوَلَمْ يَرَوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمْ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿7﴾

८. बेशक उस में बड़ी निशानी है, और उन में के ज्यादातर लोग ईमान (विश्वास) वाले नहीं हैं।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿8﴾

९. और तेरा रब बेशक वही प्रभावशाली (ग़ालिब) और रहम करने वाला है।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿9﴾

१०. और जब आप के रब ने मूसा को पुकारा कि तू जालिम लोगों के पास जा ।[1]

وَاِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى اَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿10﴾

११. फ़िरऔन की कौम के पास, क्या वह सदाचार (तक़्वा) न करेंगे ।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ؕ اَلَا يَتَّقُوْنَ ﴿11﴾

१२. मूसा ने कहा मेरे रब ! मुझे तो डर है कि कहीं वह मुझे झुठला (न) दें ।

قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ﴿12﴾

१३. और मेरा सीना (हृदय) तंग हो रहा है, मेरी जबान चल नहीं रही, इसलिए तू हारून की तरफ़ भी वह्‌यी (प्रकाशना) भेज ।

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ﴿13﴾

१४. और उन का मुझ पर मेरी एक गलती का (दावा) भी है, मुझे डर है कि कहीं वह मुझे मार न डालें ।

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْۢبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ﴿14﴾

१५. (बारी तआला ने) कहा कि कभी ऐसा न होगा, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ, हम खुद सुनने वाले तुम्हारे साथ हैं ।

قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ مُّسْتَمِعُوْنَ ﴿15﴾

१६. तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाकर कहो कि बेशक हम सारी दुनिया के रब के भेजे हुए हैं ।

فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿16﴾

१७. कि तू हमारे साथ इस्राईल की औलाद को भेज दे ।

اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿17﴾

१८. (फ़िरऔन ने) कहा कि क्या हम ने तुझे तेरे बचपन में अपने यहाँ पोषण (परवरिश) नहीं किया था? और तूने अपनी उम्र के बहुत से

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ﴿18﴾

[1] यह रब की उस वक़्त की पुकार है जब हज़रत मूसा मदयन से अपनी बीवी के साथ वापस आ रहे थे, रास्ते में उन्हें तापने के लिए आग की ज़रूरत महसूस हुई तो आग की खोज में तूर पहाड़ तक पहुँच गये, जहाँ से आकाशवाणी (आसमानी आवाज़) ने उनका स्वागत किया और उन्हें नबूअत के पद से सुशोभित (सरफ़राज़) किया गया और ज़ालिमों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने का कर्तव्य (फ़र्ज़) उनको सौंपा गया ।

साल हम में नहीं गुज़ारे?[1]

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿19﴾

१९. और फिर तू अपना वह काम कर गया जो कर गया और तू नाशुक्रों में से है।

قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿20﴾

२०. (हज़रत मूसा ने) जवाब दिया कि मैंने इस काम को उस वक़्त किया था, जबकि मैं रास्ता भूले हुए लोगों में से था।[2]

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿21﴾

२१. फिर तुम से डर खाकर मैं तुम से भाग गया, फिर मुझे मेरे रब ने हुक्म और इल्म अता किया और मुझे अपने पैग़म्बरों में से कर दिया।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿22﴾

२२. और मुझ पर क्या तेरा यही वह एहसान है? जिसे तू ज़ाहिर कर रहा है कि तूने इस्राईल की औलाद को ग़ुलाम (दास) बना रखा है।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿23﴾

२३. फ़िरऔन ने कहा कि सारी दुनिया का रब क्या है?

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿24﴾

२४. (हज़रत मूसा ने) कहा वह आकाशों और धरती और उन के बीच की सभी चीज़ों का रब है, अगर तुम ईमान रखने वाले हो।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿25﴾

२५. (फ़िरऔन ने) अपने निकटवर्तियों (क़रीबी लोगों) से कहा कि क्या तुम सुन नहीं रहे?

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿26﴾

२६. (हज़रत मूसा ने) कहा वह तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वजों (पहलों) का रब है।

---

[1] कुछ कहते हैं कि १८ साल फ़िरऔन के महल में गुज़ारे, कुछ के क़रीब ३० और कुछ के क़रीब ४० वर्ष। यानी इतनी उम्र गुज़ारने के बाद कुछ साल इधर-उधर रहकर अब तू नबूअत का दावा करने लगा है?

[2] यानी यह क़त्ल की कोशिश नहीं थी बल्कि एक घूंसा ही था जो उसे मारा था, जिस से उस की मौत हो गई। इसके सिवाय यह वाक़ेआ (घटना) भी नबूअत से पहले की है, जबकि मुझे इल्म का यह नूर नहीं दिया गया था।

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ﴿27﴾

२७. (फ़िरऔन ने) कहा (लोगो)! तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है, यह तो बिल्कुल ही दीवाना है।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿28﴾

२८. (हज़रत मूसा ने) कहा वही पूरब और पश्चिम का और उन के बीच की सभी चीज़ों का रब है, अगर तुम अक़्ल रखते हो।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ ﴿29﴾

२९. (फ़िरऔन) कहने लगा (सुन ले) अगर तूने मेरे सिवाय किसी को देवता (माबूद) बनाया तो मैं तुझे बन्दियों में डाल दूँगा।[1]

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿30﴾

३०. (मूसा ने) कहा चाहे मैं तेरे पास कोई खुली चीज़ ले आऊँ?

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿31﴾

३१. (फ़िरऔन ने) कहा अगर तू सच्चों में से है तो उसे पेश कर।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿32﴾

३२. आप ने (उसी वक़्त) अपनी छड़ी डाल दी जो अचानक खुल्लम-खुल्ला (बहुत बड़ा) अजगर बन गई।[2]

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ ﴿33﴾

३३. और अपना हाथ खींच निकाला तो वह भी उसी वक़्त हर देखने वाले को सफ़ेद रोशनी वाला दिखायी देने लगा।

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهُ إِنَّ هَٰذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ﴿34﴾

३४. (फ़िरऔन) अपने निकटवर्ती (क़रीबी) सरदारों से कहने लगा कि यह तो कोई बहुत बड़ा माहिर जादूगर है।

[1] फ़िरऔन ने जब देखा कि मूसा عليه السلام कई तरह से सारी दुनिया और आख़िरत के रब के पूरे मालिक की वज़ाहत (स्पष्टीकरण) कर रहे हैं जिस का कोई ठीक जवाब उस से नहीं बन पा रहा है तो उस ने दलीलों को छोड़ कर धमकी देना शुरू कर दिया और मूसा को जेल में डालने के लिए डराया।

[2] कई जगह पर ثعبان (साँप) को حية (नाग) और कई जगह पर جان कहा गया है। ثعبان वह साँप होता है जो बड़ा हो और جان छोटे साँप को कहते हैं और حية छोटे-बड़े दोनों तरह के साँप को बोला जाता है। (फ़तहुल क़दीर) यानी यह मोजिज़ा देते वक़्त लाठी ने पहले छोटे साँप की शक्ल धारण (अख़्तियार) किया फिर देखते ही देखते अजगर बन गया। والله أعلم

३५. यह तो चाहता है कि अपने जादू के बल से तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, बताओ अब तुम क्या राय देते हो?

يُرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿35﴾

३६. उन सब ने कहा आप इसे और इस के भाई को स्थगित (मुहलत) दीजिए और सभी नगरों में जमा करने वालों को भेज दीजिए।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿36﴾

३७. जो आप के पास माहिर जादूगरों को ले आयें।

يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ﴿37﴾

३८. फिर एक मुकर्रर दिन के वक्त पर सभी जादूगर जमा किये गये।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿38﴾

३९. और आम लोगों से भी कह दिया गया कि तुम भी जमा हो जाओगे।

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ﴿39﴾

४०. ताकि अगर जादूगर ग़ालिब हो जायें तो हम उन्हीं की पैरवी करेंगे।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿40﴾

४१. जादूगर आकर फ़िरऔन से कहने लगे कि अगर हम जीत गये तो हमें कुछ उपहार (इन्आम) भी मिलेगा।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿41﴾

४२. (फ़िरऔन ने) कहा हाँ! (बड़ी ख़ुशी से) बल्कि ऐसी हालत में तुम मेरे ख़ास दरबारी बन जाओगे।

قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿42﴾

४३. (हज़रत) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ तुम्हें डालना है डाल दो।

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ﴿43﴾

४४. उन्होंने अपनी रस्सियाँ और डन्डे डाल दिये और कहने लगे फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम! हम ज़रूर विजयी (ग़ालिब) होंगे।

فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿44﴾

४५. अब (हज़रत) मूसा ने भी अपनी छड़ी डाल दी, जिस ने उसी पल उन के झूठ के बनाये खेल को निगलना शुरू कर दिया।

فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿45﴾

४६. यह देखते ही जादूगर सज्दे में गिर गये।

فَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿46﴾

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿47﴾

४७. और उन्होंने साफ़ तौर से कह दिया कि हम तो सारे लोक के रब पर ईमान ले आये।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿48﴾

४८. यानी मूसा और हारून के रब पर।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۥ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۚ ﴿49﴾

४९. (फ़िरऔन ने) कहा कि मेरी इजाज़त से पहले तुम उस पर ईमान ले आये। बेशक यही तुम्हारा सरदार (बड़ा गुरू) है जिस ने तुम सब को जादू सिखाया है[1] तो तुम्हें अभी-अभी मालूम हो जायेगा। क़सम है, मैं भी तुम्हारे हाथ-पैर उल्टे तौर से काट दूंगा और तुम सब को फांसी पर लटका दूंगा।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۡ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۚ ﴿50﴾

५०. उन्होंने कहा कि कोई फ़िक्र नहीं हम तो अपने रब की तरफ़ लौटकर जाने वाले ही हैं।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ ﴿51﴾

५१. इस बिना पर कि हम सब से पहले ईमान वाले बने हैं, हमें आशा है कि हमारा रब हमारी सभी ग़ल्तियां माफ़ कर देगा।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿52﴾

५२. और हम ने मूसा को वह्यी (प्रकाशना) की कि रातों-रात मेरे बंदों को निकाल ले जा, तुम सब पीछा किये जाओगे।[2]

---

[1] फ़िरऔन के लिए यह वाक़ेआ अजीब और बहुत आश्चर्यजनक (ताज्जुब वाला) था कि जिन जादूगरों के ज़रिये वह जीत और कामयाबी की उम्मीद लगाये बैठा था, वही न केवल हार गये बल्कि उसी समय वे उस रब पर ईमान ले आये जिस ने हज़रत मूसा और हारून को निशानी और मोजिज़ा देकर भेजा था, लेकिन बजाय इस के कि फ़िरऔन भी ग़ौर व फ़िक्र करके ईमान ले आता, उस ने तकब्बुर घमण्ड का रास्ता अपनाया और जादूगरों को डराना धमकाना शुरू कर दिया और कहा कि तुम सब के सब इस के शिष्य (चेले) हो।

[2] जब मिस्र देश में हज़रत मूसा का निवास ज़्यादा वक़्त तक हो गया और हर तरह से उन्होंने फ़िरऔन और उस के दरबारियों पर साबित कर दिया, लेकिन उस के बावजूद वे ईमान लाने के लिए तैयार नहीं हुए तो अब इसके सिवाय कोई रास्ता बाक़ी नहीं रह गया था कि उन्हें सज़ा और अज़ाब से पीड़ित (दोचार) किया जाये। इसलिए अल्लाह तआला ने मूसा को हुक्म दिया कि रातों-रात इस्राईल की औलाद को लेकर यहाँ से निकल जायें, और कहा कि फ़िरऔन तुम्हारे पीछे आयेगा, घबराना नहीं।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ (53)

५३. फ़िरऔन ने नगरों में जमा करने वालों को भेज दिया।

إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ (54)

५४. कि बेशक यह गुट बहुत ही कम तादाद में है।[1]

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ (55)

५५. और उस पर ये हमें बहुत क्रोधित (ग़ज़बनाक) कर रहे हैं।

وَإِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ (56)

५६. और बेशक हम बड़ी तादाद में हैं, उन से सावधान (चौकन्ना) रहने वाले।

فَأَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ (57)

५७. आख़िरकार हम ने उन्हें बाग़ों और चश्मों से निकाल बाहर किया।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ (58)

५८. और ख़ज़ानों से और अच्छे-अच्छे जगहों से।

كَذٰلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ (59)

५९. इसी तरह हुआ, और हम ने उन (सभी चीज़ों) का वारिस इस्राईल की औलाद को बना दिया।

فَأَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ (60)

६०. इसलिए फ़िरऔन के पैरोकार सूरज निकलते ही उन का पीछा करने निकल पड़े।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ أَصْحٰبُ مُوْسٰٓى إِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ (61)

६१. इसलिए जब दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो बेशक पकड़ लिये गये।

قَالَ كَلَّا ۚ إِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ (62)

६२. (मूसा ने) कहा कभी नहीं। यक़ीन करो, मेरा रब मेरे साथ है जो ज़रूर मुझे रास्ता दिखायेगा।

فَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰٓى أَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ (63)

६३. हम ने मूसा की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) भेजी कि समुद्र के पानी पर अपनी छड़ी मार, तो उसी वक़्त समुद्र फट गया और हर एक हिस्सा पानी के बड़े पहाड़ के बराबर हो गया।[2]

---

[1] यह बेइज़्ज़त करने के लिए कहा, वर्ना उनकी तादाद छ: लाख बतायी जाती है।

[2] فرق का मतलब है समुद्र का हिस्सा, طود का मतलब है पहाड़। यानी पानी का हर एक हिस्सा

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْآخَرِينَ ﴿64﴾

६४. और हम ने उसी जगह पर दूसरों को क़रीब ला खड़ा कर दिया।

وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿65﴾

६५. और मूसा को और उसके सभी साथियों को मुक्ति प्रदान (नजात अता) कर दी।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ ﴿66﴾

६६. फिर दूसरे सभी को डुबो दिया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿67﴾

६७. बेशक इसमें बड़ी शिक्षा (नसीहत) है, और उन में के ज़्यादातर लोग ईमान वाले नहीं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿68﴾

६८. और बेशक आप का रब बड़ा प्रभावशाली (ग़ालिब) और रहम करने वाला है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ ﴿69﴾

६९. और उन्हें इब्राहीम का वाक़ेआ भी सुना दो।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿70﴾

७०. जबकि उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि तुम किस की इबादत करते हो।

قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عَاكِفِينَ ﴿71﴾

७१. उन्होंने जवाब दिया कि हम मूर्तियों की इबादत करते हैं, हम तो बराबर उन के पुजारी बने बैठे हैं।

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ﴿72﴾

७२. आप (ﷺ) ने फ़रमाया कि जब तुम उन्हें पुकारते हो तो क्या वह सुनते भी हैं?

أَوْ يَنفَعُونَكُمْ أَوْ يَضُرُّونَ ﴿73﴾

७३. या तुम्हें फ़ायेदा-नुक़सान भी पहुँचा सकते हैं।

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿74﴾

७४. उन्होंने कहा यह (हम कुछ नहीं जानते) हम ने तो अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को इस तरह करते पाया।

बड़े पहाड़ के रूप में खड़ा हो गया। यह अल्लाह तआला की तरफ़ से मोजिज़ा का इज़हार था ताकि मूसा और उनकी क़ौम फ़िरऔन से छुटकारा पा ले, अल्लाह के इस समर्थन (ताइद) के बिना फ़िरऔन से छुटकारा मुमकिन नहीं था।

قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ (75)

७५. (आप ने) कहा कुछ जानते भी हो, जिन्हें तुम पूज रहे हो।

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ (76)

७६. तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादा,

فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ (77)

७७. वे सभी मेरे दुश्मन हैं सिवाय सच्चे अल्लाह (तआला) के जो सारे जहाँ का पालनहार है।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ (78)

७८. जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत करता है।

وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ (79)

७९. वही है जो मुझे खिलाता-पिलाता है।

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ (80)

८०. तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग (शिफ़ा अता) करता है।

وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ (81)

८१. और वही मुझे मार डालेगा, फिर जिन्दा कर देगा।

وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ (82)

८२. और जिस से उम्मीद बंधी हुई है कि वह बदला देने वाले दिन मेरे गुनाह को माफ़ कर देगा।

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ (83)

८३. हे मेरे रब ! मुझे समझ अता कर[1] और मुझे पाक लोगों में मिला दे।

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ (84)

८४. और मेरी पाक याद आने वाले लोगों में भी बाक़ी रख।

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ (85)

८५. और मुझे सुखों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे।

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ (86)

८६. और मेरे पिता को माफ़ कर दे, बेशक वह भटकने वालों मे से था।[2]

---

[1] हुक्म और हिक्मत से मुराद इल्म और समझ या नबूअत और रिसालत या अल्लाह के हुक्म और विधान (शरीअत) की जानकारी है।

[2] यह दुआ उस समय की थी, जब उनको मालूम नहीं था कि मुश्रिक (अल्लाह का दुश्मन) के लिए मग़फ़िरत की दुआ करना हराम है, जब अल्लाह तआला ने यह साफ़ कर दिया तो उन्होंने अपने पिता से भी अलगाव का इज़्हार कर दिया। (सूर: अल-तौबा-११४)

८७. और जिस दिन कि लोग दोबारा ज़िन्दा किये जायें मुझे अपमानित (ज़लील) न कर।

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿87﴾

८८. जिस दिन कि माल और औलाद कुछ काम न आयेगा।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿88﴾

८९. लेकिन (फ़ायदेमंद वही होगा) जो अल्लाह तआला के सामने निर्दोष (बेऐब) दिल लेकर जाये।[1]

إِلَّا مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿89﴾

९०. और परहेज़गारों (सदाचारियों) के लिए जन्नत बहुत क़रीब ला दी जायेगी।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿90﴾

९१. और भटके हुए लोगों के लिए नरक (जहन्नम) ज़ाहिर कर दिया जायेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿91﴾

९२. और उन से पूछा जायेगा कि तुम जिन की इबादत करते रहे वह कहाँ हैं।

وَقِيْلَ لَهُمْ أَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿92﴾

९३. जो अल्लाह (तआला) के सिवाय थे, क्या वह तुम्हारी मदद करते हैं? या कोई बदला ले सकते हैं।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿93﴾

९४. इसलिए वह सभी और कुल भटके हुए लोग नरक में ऊपर-नीचे डाल दिये जायेंगे।

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿94﴾

९५. और इब्लीस की सभी की सभी सेना भी।

وَجُنُوْدُ إِبْلِيْسَ أَجْمَعُوْنَ ﴿95﴾

९६. वहाँ वे आपस में लड़ते-झगड़ते हुए कहेंगे।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿96﴾

९७. अल्लाह की क़सम! बेशक हम तो खुली ग़लती पर थे।

تَاللّٰهِ إِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿97﴾

९८. जबकि तुम्हें सारी दुनिया के रब के बराबर समझ बैठे थे।

إِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿98﴾

[1] साफ़ दिल या निर्दोष (बेऐब) दिल से मुराद वह दिल जो शिर्क से पाक हो, यानी ईमानवाला दिल, इसलिए कि काफ़िर और मुश्रिक का दिल रोगी होता है। कुछ कहते हैं : बिदअत से ख़ाली और सुन्नत से मुतमईन दिल, कुछ के क़रीब ख़्वाहिशात से पाक दिल और कुछ के क़रीब बेवकूफ़ी के अंधेरे और नैतिक पतन (अख़लाक़ी गिरावट) से साफ़ दिल, यह सभी मतलब ठीक हो सकते है, क्योंकि ईमानवाले का दिल ऊपर बयान किए सभी बुराईयों से पाक होता है।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿99﴾

९९. और हमें तो सिवाय मुजरिमों के किसी दूसरे ने गुमराह नहीं किया था।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿100﴾

१००. अब तो हमारी कोई सिफ़ारिश करने वाला भी नहीं।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿101﴾

१०१. और न कोई (सच्चा) ख़ैरख़ाह दोस्त।[1]

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿102﴾

१०२. अगर हमें एक वार दोबारा जाने को मिलता तो हम पक्के सच्चे ईमान वाले बन जाते।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾

१०३. यह बात बेशक एक बहुत बड़ी निशानी है, उन में के ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿104﴾

१०४. और बेशक आप का रब ही प्रभावशाली (ग़ालिब) रहम करने वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿105﴾

१०५. नूह की क़ौम ने भी नबियों को झुठलाया।[2]

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿106﴾

१०६. जबकि उन के भाई नूह ने कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह का डर नहीं?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿107﴾

१०७. (सुनो) मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का अमानतदार रसूल हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿108﴾

१०८. इसलिए तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए और मेरी बात माननी चाहिए।

[1] गुनाहगार मुसलमानों की सिफ़ारिश तो अल्लाह की इजाज़त के बाद अंबिया, नेक लोग ख़ास तौर से नबी करीम ﷺ करेंगे, लेकिन काफ़िर और मुश्रिक की सिफ़ारिश करने की इजाज़त किसी को भी न होगी और न वहाँ दोस्ती ही काम आयेगी।

[2] नूह की क़ौम ने अगरचे केवल अपने पैग़म्बर हज़रत नूह को झुठलाया था, लेकिन चूँकि एक नबी को झुठलाना सभी नबियों को झुठलाने के बराबर है, इसलिए फ़रमाया कि नूह की क़ौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया।

وَمَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿109﴾

१०९. और मैं तुम से उस पर कोई बदला नहीं चाहता, मेरा बदला तो केवल सारी दुनिया के रब के पास है।

فَٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿110﴾

११०. इसलिए तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी इताअत करो।

قَالُوٓا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَٱتَّبَعَكَ ٱلْأَرْذَلُونَ ﴿111﴾

१११. (क़ौम ने) जवाब दिया कि क्या हम तुम पर ईमान लायें? तेरी इताअत करने वाले तो नीच लोग हैं।

قَالَ وَمَا عِلْمِى بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿112﴾

११२. आप ने फ़रमाया, मुझे क्या पता कि वह पहले क्या करते रहे?

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّى ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿113﴾

११३. उन का हिसाब तो मेरे रब के ऊपर है अगर तुम्हें समझ हो तो।

وَمَآ أَنَا بِطَارِدِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿114﴾

११४. और मैं ईमानदारों को धक्के देने वाला नहीं।

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿115﴾

११५. मैं तो वाजेह तौर से डरा देने वाला हूं।

قَالُوا لَئِن لَّمْ تَنتَهِ يَٰنُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلْمَرْجُومِينَ ﴿116﴾

११६. उन्होंने कहा कि हे नूह! अगर तू न रूका तो जरूर तुझे पत्थरों से मारकर मार दिया जायेगा।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِى كَذَّبُونِ ﴿117﴾

११७. (आप ने) कहा हे मेरे रब! मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया।

فَٱفْتَحْ بَيْنِى وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِى وَمَن مَّعِىَ مِنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ ﴿118﴾

११८. इसलिए तू मुझ में और उन में कोई निश्चित (कतई) फ़ैसला कर दे और मुझे और मेरे ईमानवाले साथियों को नजात अता कर दे।

فَأَنجَيْنَٰهُ وَمَن مَّعَهُۥ فِى ٱلْفُلْكِ ٱلْمَشْحُونِ ﴿119﴾

११९. इसलिए हम ने उसे और उस के साथियों को भरी हुई नाव में (सवार कर के) नजात अता की।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ ٱلْبَاقِينَ ﴿120﴾

१२०. फिर उस के बाद बाक़ी सभी लोगों को हम ने डुबो दिया।

१२१. बेशक इस में बहुत बड़ी नसीहत (शिक्षा) है, और उन में के ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले थे भी नही।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ (121)

१२२. और बेशक आप का रब वही है बहुत रहम करने वाला।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ (122)

१२३. 'आद' (क़ौम) ने भी रसूलों को झुठलाया।[1]

كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ (123)

१२४. जब कि उन से उन के भाई हूद[2] ने कहा कि क्या तुम डरते नहीं?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ (124)

१२५. मैं तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर (संदेश-वाहक) हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (125)

१२६. इसलिए अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ (126)

१२७. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरी मज़दूरी सारी दुनिया के रब के पास ही है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (127)

१२८. क्या तुम एक-एक टीले पर खेल (क्रीडा) के रूप तमाशे का निशान (चिन्ह) बना रहे हो।

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ (128)

१२९. और बड़े उद्योग (सन्अत) वाले (मज़बूत महल निर्माण) कर रहे हो, जैसाकि तुम हमेशा यहीं रहोगे।

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ (129)

---

[1] 'आद' उन के पर दादा का नाम था, जिन के नाम पर उन की क़ौम का नाम पड़ा, यहां आद को क़बीला मानकर كَذَّبَتْ (स्त्रीलिंग रूप) लाया गया है।

[2] हूद को भी आद का भाई इसलिए कहा गया है कि हर नबी उस क़ौम का इंसान होता था और उसी बिना पर उन्हें उस क़ौम का भाई कहा गया है, जैसाकि आगे भी आयेगा और नबियों और रसूलों का यह इंसानी शक्ल भी उन के ईमान लाने में रुकावट रही है। उनका ख़्याल था कि नबी इंसान नहीं, इंसान से ऊँचा होना चाहिए। आज भी इस पूरे सच से अंजान लोग इस्लाम के पैग़म्बर नबी करीम ﷺ को इंसान से ऊँचा साबित करने पर तुले हैं, अगरचे वह भी क़ुरैश क़बीले के एक इंसान थे, जिनकी तरफ़ पहली बार उनको पैग़म्बर बनाकर भेजा गया था।

१३०. और जब किसी पर हाथ डालते हो तो कड़ाई और सख़्ती से पकड़ते हो।

وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿130﴾

१३१. तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿131﴾

१३२. और उस से डरो जिस ने उन चीज़ों से तुम्हारी मदद की जिन्हें तुम जानते हो।

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿132﴾

१३३. उस ने तुम्हारी मदद की माल और औलाद (सन्तान) से।

أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ﴿133﴾

१३४. और बाग़ों से और चश्मों से।

وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿134﴾

१३५. मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿135﴾

१३६. (उन्होंने) कहा कि आप नसीहत करें या नसीहत करने वालों में न हों हम पर बराबर है।

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُن مِّنَ الْوَاعِظِينَ ﴿136﴾

१३७. यह तो पुराने ज़माने के लोगों का दीन है।

إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿137﴾

१३८. और हम कभी अज़ाब पाने वाले न होंगे।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿138﴾

१३९. चूँकि 'आद' की क़ौम ने (हज़रत) हूद को झुठलाया, इसलिए हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है, और उन में के ज़्यादातर ईमान वाले न थे।

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿139﴾

१४०. और बेशक आप का रब वही ग़ालिब रहम करने वाला है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿140﴾

१४१. 'समूद' के समुदाय वालों ने[1] भी पैग़म्बर को झुठलाया।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿141﴾

[1] समूद का निवास स्थान 'हिजर' का इलाक़ा था जो हिजाज़ की उत्तर दिशा में है, आजकल उसे 'मदायन स्वालेह' कहते हैं। (ऐसरूत्तफ़ासीर) यह अरब थे। नबी ﷺ तबूक जाते वक़्त उन बस्तियों के बीच से गये थे, जैसाकि पहले बयान हो चुका है।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿142﴾

१४२. जब उन के भाई 'स्वालेह' ने उन से कहा कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿143﴾

१४३. मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का अमानतदार पैग़म्बर हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿144﴾

१४४. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा करो।

وَمَا أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿145﴾

१४५. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरी उजरत तो सारी दुनिया के रब के ऊपर ही है।

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هٰهُنَا اٰمِنِينَ ﴿146﴾

१४६. क्या उन चीज़ों में जो यहां हैं तुम शान्ति के साथ छोड़ दिये जाओगे?

فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿147﴾

१४७. (यानी) उन बाग़ों और उन चश्मों में।

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ﴿148﴾

१४८. और उन खेतों और उन खजूरों के बाग़ों में जिन के गुच्छे (बोझ की वजह) टूटे पड़ते हैं।

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فٰرِهِينَ ﴿149﴾

१४९. और तुम पहाड़ों को काट-काट कर आकर्षक (सुन्दर) भवनों का निर्माण (तामीर) कर रहे हो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيعُونِ ﴿150﴾

१५०. इसलिए अल्लाह से डरो और मेरी इत्तेबा करो।

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿151﴾

१५१. और सीमा उल्लंघन (तजावुज़) करने वालों के अनुकरण (पैरवी) से रूक जाओ।

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿152﴾

१५२. जो धरती में फ़साद फैला रहे हैं और सुधार नहीं करते।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿153﴾

१५३. (वे) बोले कि तू तो बस उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ فَأْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿154﴾

१५४. तू तो हम जैसा ही इंसान है, अगर तू सच्चों में से है तो कोई मोजिज़ा ले आ।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿155﴾

१५५. (आप ने) कहा यह है ऊँटनी, पानी पीने की एक वारी इसकी और एक मुकर्रर दिन को पानी पीने की वारी तुम्हारी।[1]

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿156﴾

१५६. (और ख़बरदार!) इसे बुराई से हाथ न लगाना, वरन् एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें पकड़ लेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿157﴾

१५७. फिर भी उन्होंने उस के हाथ-पैर काट डाले, फिर वह पछताने वाले हो गये।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿158﴾

१५८. तो अज़ाब ने उन्हें आ दबोचा[2] बेशक इस में शिक्षा (नसीहत) है, और उनमें से ज़्यादातर लोग ईमानवाले न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿159﴾

१५९. और बेशक आप का रब बहुत ग़ालिब (शक्तिशाली) और रहम करने वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿160﴾

१६०. लूत की कौम[3] ने भी नबियों को झुठलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿161﴾

१६१. जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम अल्लाह से डर नहीं रखते?

---

[1] यह वही ऊँटनी थी, जो उनकी माँग पर पत्थर की चट्टान से मोजिज़े की शक्ल में निकली थी, एक दिन ऊँटनी के लिए और एक दिन उन के लिए पानी मुकर्रर कर दिया गया था, और उन से कह दिया गया था कि जो दिन तुम्हारा पानी लेने का होगा उस दिन ऊँटनी घाट पर नहीं आयेगी और जो दिन ऊँटनी के पानी पीने का होगा, तुम्हें घाट पर आने की इजाज़त नहीं है।

[2] यह अज़ाब धरती से भूकम्प (ज़लज़ला) और ऊपर से बहुत तेज़ चिंघाड़ के रूप में आया, जिस से सब मर गये।

[3] हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम के भाई हारान बिन आज़र के पुत्र थे, उनको हज़रत इब्राहीम की ज़िन्दगी में ही नबी बना कर भेजा गया था, उनकी क़ौम 'सदूम' और 'अमूरा' में निवास करती थी, यह बस्तियाँ सीरिया के इलाक़े में थीं।

१६२. मैं तुम्हारी तरफ अमानतदार रसूल हूं।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿162﴾

१६३. इसलिए तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरी इत्तेबा करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿163﴾

१६४. और मैं तुम से उस का कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला तो केवल सारी दुनिया के रब पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿164﴾

१६५. क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाया करते हो।

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿165﴾

१६६. और तुम्हारी जिन औरतों को अल्लाह (तआला) ने तुम्हारी बीवी बनाया है, उन को छोड़ देते हो, बात यह है कि तुम हो ही सीमा लांघने वाले।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿166﴾

१६७. (उन्होंने) जवाब दिया कि हे लूत! अगर तू न रुका तो अवश्य निकाल दिया जायेगा।[1]

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِينَ ﴿167﴾

१६८. (आप ने) कहा कि मैं तुम्हारे अमल से बहुत नाखुश हूं।

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿168﴾

१६९. मेरे रब! मुझे और मेरे परिवार को इस (दुष्कर्म) से बचा ले, जो यह करते हैं।

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿169﴾

१७०. इसलिए हम ने उसे और उस के सम्बन्धियों को सभी को बचा लिया।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿170﴾

१७१. सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में हो गयी।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿171﴾

१७२. फिर हम ने (बाकी) दूसरे सभी को नाश कर दिया।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ﴿172﴾

---

[1] यानी हजरत लूत की दावत और नसीहत के जवाब में उन्होंने कहा तू बड़ा पाक बना फिरता है, याद रख! अगर तू अपने इस काम से नहीं रुका तो हम तुझे बस्ती में नहीं रहने देंगे, आज भी कुकर्मियों का इतना असर है कि नेक लोग मुंह छिपाये फिरते हैं और नेक लोगों के लिए जिन्दगी गुजारना मुश्किल बना दिया गया है।

१७३. और हम ने उन के ऊपर एक ख़ास तरह की बारिश की, वह बड़ी बुरी बारिश थी जो डराये गये लोगों पर बरसी।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿173﴾

१७४. बेशक इस में भी बड़ी निशानी है, उन में से भी ज़्यादातर मुसलमान नहीं थे।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿174﴾

१७५. बेशक तेरा रब वही है ग़ालिब रहम करने वाला।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿175﴾

१७६. एयका वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।

كَذَّبَ اَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿176﴾

१७७. जबकि उन से शुऐब ने कहा कि क्या तुम्हें (अल्लाह का) डर और भय नहीं?

اِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿177﴾

१७८. मैं तुम्हारी तरफ़ अमानतदार रसूल हूं।

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿178﴾

१७९. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿179﴾

१८०. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा बदला सारी दुनिया के रब पर है।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿180﴾

१८१. नाप-तौल पूरा करो और कम देने वालों में शामिल न हो।

اَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ﴿181﴾

१८२. और सीधे (सही) तराज़ू से तौला करो।

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ﴿182﴾

१८३. और लोगों को उनकी चीज़ें कमी से न दो, और (निर्भय होकर) धरती पर फ़साद मचाते न फिरो।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ﴿183﴾

१८४. और उस (अल्लाह) का डर रखो जिस ने ख़ुद तुम्हें और पहले की मख़्लूक़ को पैदा किया।

وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿184﴾

१८५. (उन्होंने) कहा तू तो उन में से है जिन पर जादू कर दिया जाता है।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿185﴾

وَمَآ أَنتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِن نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكَٰذِبِينَ ﴿186﴾

१८६. और तू तो हम ही जैसा एक इंसान है और हम तो तुझे झूठ बोलने वालों में से ही समझते हैं।

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ إِن كُنتَ مِنَ الصَّٰدِقِينَ ﴿187﴾

१८७. अगर तुम सच्चे लोगों में से हो तो हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो।

قَالَ رَبِّيٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿188﴾

१८८. (उन्होंने) कहा कि मेरा रब अच्छी तरह से जानने वाला है जो कुछ तुम कर रहे हो।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿189﴾

१८९. इसलिए उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें छाया वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया, वह बड़े भारी दिन का अज़ाब था।

إِنَّ فِى ذَٰلِكَ لَءَايَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ ﴿190﴾

१९०. बेशक उस में बड़ी निशानी है और उन में के ज़्यादातर मुसलमान नहीं थे।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿191﴾

१९१. और बेशक तेरा रब वही ग़ालिब दया वाला है।

وَإِنَّهُۥ لَتَنزِيلُ رَبِّ الْعَٰلَمِينَ ﴿192﴾

१९२. और बेशक यह (क़ुरआन) पूरी दुनिया के रब का नाज़िल किया हुआ है।

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ﴿193﴾

१९३. इसे अमानतदार फ़रिश्ता लेकर आया है।

عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿194﴾

१९४. आप के दिल पर (नाज़िल हुआ है) कि आप सतर्क (आगाह) कर देने वालों में से हो जायें।

بِلِسَانٍ عَرَبِىٍّ مُّبِينٍ ﴿195﴾

१९५. साफ़ अरबी भाषा में है।

وَإِنَّهُۥ لَفِى زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ﴿196﴾

१९६. और अगले नबियों की किताबों में भी इस (क़ुरआन) की चर्चा है।[1]

[1] यानी जिस तरह दुनिया के आख़िरी पैग़म्बर (रसूलुल्लाह ﷺ) के आने और आप ﷺ की सिफ़ात का बयान दूसरी किताबों में है, उसी तरह इस क़ुरआन के नाज़िल होने की ख़ुशख़बरी उन किताबों में दी गयी थी। एक दूसरा मायेना यह लिया गया है कि यह क़ुरआन मजीद उन हुक्मों के अनुसार जिन पर सभी शरीअतों में एकता रही है, पिछली किताबों मे भी मौजूद रहा है।

१९७. क्या उन्हें यह निशानी काफी नहीं कि (क़ुरआन की सच्चाई को) तो इस्राईल की औलाद के विद्वान (आलिम) भी जानते हैं।

أَوَلَمْ يَكُن لَّهُمْ آيَةً أَن يَعْلَمَهُ عُلَمَٰٓؤُا بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿197﴾

१९८. और अगर हम इसे किसी (अरबी भाषी के सिवाय) किसी अजमी पर नाज़िल करते।

وَلَوْ نَزَّلْنَٰهُ عَلَىٰ بَعْضِ ٱلْأَعْجَمِينَ ﴿198﴾

१९९. तो वह उन के सामने उस का पाठ करता तो यह उसे नहीं मानते।

فَقَرَأَهُۥ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ مُؤْمِنِينَ ﴿199﴾

२००. इसी तरह हम ने पापियों के दिलों में (इंकार) को दाख़िल कर दिया है।

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَٰهُ فِي قُلُوبِ ٱلْمُجْرِمِينَ ﴿200﴾

२०१. वे जब तक दुखदायी अज़ाब को देख न लेंगे ईमान न लायेंगे।

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِۦ حَتَّىٰ يَرَوُا۟ ٱلْعَذَابَ ٱلْأَلِيمَ ﴿201﴾

२०२. इसलिए वह (अज़ाब) अचानक आ जायेगा और उन्हें उसका अंदाज़ा भी न होगा।

فَيَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿202﴾

२०३. उस समय कहेंगे कि क्या हमें कुछ मौक़ा दिया जायेगा?

فَيَقُولُوا۟ هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿203﴾

२०४. तो क्या ये हमारे अज़ाब की जल्दी मचा रहे हैं?

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿204﴾

२०५. अच्छा यह भी बताओ, कि अगर हम ने उन्हें सालों फ़ायेदा उठाने दिया।

أَفَرَءَيْتَ إِن مَّتَّعْنَٰهُمْ سِنِينَ ﴿205﴾

२०६. फिर उन्हें वह (अज़ाब) आ लगा जिस से उन्हें डराया जाता था।

ثُمَّ جَآءَهُم مَّا كَانُوا۟ يُوعَدُونَ ﴿206﴾

२०७. तो जो कुछ भी यह फ़ायदे दिये जाते रहे उस में से कुछ भी उन्हें काम न दे सकेगा।

مَآ أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا۟ يُمَتَّعُونَ ﴿207﴾

२०८. और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया है, लेकिन उसी हालत में कि उस के लिए डराने वाले थे।

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِن قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنذِرُونَ ﴿208﴾

२०९. शिक्षा (नसीहत) के रूप में, और हम ज़ुल्म करने वाले नहीं हैं ।[1]

ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿209﴾

२१०. और इस (क़ुरआन) को शैतान नही लाये ।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿210﴾

२११. और न वह इस लायक़ है, न उन्हें इस की ताक़त है ।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿211﴾

२१२. बल्कि वे तो सुनने से भी महरूम (वंचित) कर दिये गये हैं ।

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿212﴾

२१३. इसलिए तू अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को न पुकार कि तू भी सज़ा पाने वालों में से हो जाये ।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿213﴾

२१४. और अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरा दे।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿214﴾

२१५. और उस के साथ नरमी से पेश आ, जो भी ईमान लाने वाला होकर तेरे आधीन (ताबे) हो जाये ।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿215﴾

२१६. अगर ये लोग तेरी नाफ़रमानी करें तो तू एलान कर दे कि मैं इन कामों से अलग हूँ जो तुम कर हे हो ।

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿216﴾

२१७. और अपना पूरा भरोसा ग़ालिब रहीम अल्लाह पर रख ।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿217﴾

२१८. जो तुझे देखता रहता है, जबकि तू खड़ा होता है ।

الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿218﴾

२१९. और सज्दा (नमन) करने वालों के बीच तेरा घूमना-फिरना भी ।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿219﴾

[1] यानी रसूल के भेजे और सावधान (ख़बरदार) किये बिना अगर हम किसी बस्ती को हलाक करते तो यह ज़ुल्म होता, हम ने ऐसा ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि इंसाफ़ के नियमानुसार (मुताबिक़) पहले उन्हें डराया और उस के बाद जब उन्होंने पैग़म्बर की बात नहीं मानी, तो हम ने उन्हें नाश कर दिया । यही विषय सूर: बनी इस्राईल-१८ और सूर: अल-क़सस-५९ वग़ैरह में भी बयान किया गया है ।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (220)

२२०. बेशक वह बड़ा सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ (221)

२२१. क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ (222)

२२२. वह हर झूठे पापी पर उतरते हैं।[1]

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كَاذِبُونَ (223)

२२३. वे (उचटती हुई) सुनी सुनाई पहुँचा देते हैं और उन में के ज़्यादातर झूठे हैं।

وَالشُّعَرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ (224)

२२४. और कवियों (शायरों) की पैरवी वही करते हैं जो बहके हुए हों।

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ (225)

२२५. क्या आप ने नहीं देखा कि कवि (शायर) एक-एक वादी में सिर टकराते फिरते हैं।[2]

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ (226)

२२६. और वह कहते हैं जो करते नहीं।[3]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانتَصَرُوا مِن بَعْدِ مَا ظُلِمُوا ۗ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنقَلَبٍ يَنقَلِبُونَ (227)

२२७. सिवाय उन के जो ईमान लाये और नेकी के काम किये और ज़्यादा तादाद में अल्लाह तआला की प्रशंसा (तारीफ़) का बयान किया और अपनी मज़लूमी के बाद इन्तिक़ाम लिया, और जिन्होंने ज़ुल्म किया है वह भी अभी जान लेंगे कि किस करवट उलटते हैं।

---

[1] यानी इस क़ुरआन के नाज़िल होने में शैतान का कोई हाथ नहीं है, क्योंकि शैतान तो झूठे और पापियों (यानी काहिनों और नजूमियों वग़ैरह) पर उतरते हैं न कि नबियों और नेक काम करने वालों पर।

[2] ज़्यादातर कवि (शायर) ऐसे होते हैं जो प्रशंसा (तारीफ़) और भर्त्सना (मुज़म्मत) में नियम का पालन करने के बजाये मनमाने ख़्यालों का प्रदर्शन (इज़हार) करते हैं, इस के सिवाय उस में मुबालग़ा का इस्तेमाल करते हैं और कविता की कल्पना (तसव्वुर) में इधर-उधर भटकते हैं, इसलिए फ़रमाया कि इन के पीछे लगने वाले भी भटके हुए हैं।

[3] इस से उन कवियों (शायरों) को अलग कर दिया गया है, जिनकी कविता सच और सच्चाई पर आधारित (मबनी) है, और ऐसे लफ़्ज़ों से अलगाव किया है जिन से यह वाज़ेह हो जाता है कि ईमानदार, नेक और अल्लाह को ज़्यादातर याद करने वाला कवि बेकार कविता (शायरी) जिस में झूठ और मुबालग़ा की मिलावट हो, कर ही नहीं सकता, यह उन ही लोगों का काम है जो ईमान की सिफ़त से ख़ाली हो।

सूरतुन नमल-२७

سُورَةُ النَّمْلِ

सूर: नमल* मक्का में उतरी और इसकी तिरानवे आयतें और सात रूकुउ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

طٰسٓ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿1﴾

१. ता॰ सीन॰, ये आयतें हैं क़ुरआन की (यानी वाज़ेह) और रौशन किताब की।

هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿2﴾

२. हिदायत (मार्गदर्शक) और ख़ुशख़बरी ईमान वालों के लिए।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿3﴾

३. जो नमाज़ क़ायम (स्थापित) करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं और आख़िरत पर ईमान रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿4﴾

४. जो लोग क़यामत पर ईमान नहीं लाते हमने उन के लिए उन के आमाल को मुज़य्यन कर दिखाया है, इसलिए वे भटकते-फिरते हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ﴿5﴾

५. यही वह लोग हैं जिन के लिए बुरा अज़ाब है और आख़िरत में भी वह बहुत नुक़सान वाले हैं।

وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ﴿6﴾

६. और बेशक आप को क़ुरआन सिखाया जा रहा है अल्लाह हिक्मत वाले और जानने वाले की तरफ़ से।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ﴿7﴾

७. (याद होगा) जबकि मूसा ने अपने परिवार वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहां से या तो कोई ख़बर लेकर या आग का कोई जलता हुआ अंगारा लेकर अभी तुम्हारे पास आ

---

* नमल अरबी भाषा (ज़बान) में चींटी को कहते हैं। इस सूर: में चींटियों के वाक़ेआ का बयान है, जिस की वजह से इस को सूर: नमल कहते हैं।

जाऊँगा, ताकि तुम सेंक-ताप कर लो ।[1]

८. जब वहाँ पहुँचे तो आवाज़ दी गयी कि मुबारक है वह जो उस आग में है और मुबारक है वह जो उस के आस-पास है, और पाक है अल्लाह जो सारी दुनिया का रब है ।[2]

فَلَمَّا جَآءَهَا نُودِيَ أَنۢ بُورِكَ مَن فِى ٱلنَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَٰنَ ٱللَّهِ رَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٨﴾

९. मूसा! (सुन) बात यह है कि मैं ही अल्लाह हूँ ज़बरदस्त और हिक्मत वाला ।

يَٰمُوسَىٰٓ إِنَّهُۥٓ أَنَا ٱللَّهُ ٱلْعَزِيزُ ٱلْحَكِيمُ ﴿٩﴾

१०. और तू अपनी छड़ी डाल दे, (मूसा ने) जब उसे हिलता-डुलता देखा, इस तरह कि जैसे साँप है, तो मुँह मोड़ कर पीठ फेरकर भागे और पलट कर भी न देखा, हे मूसा! डरो नहीं,[3] मेरे सामने पैग़म्बर डरा नहीं करते ।

وَأَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَلَمَّا رَءَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَلَّىٰ مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ ۚ يَٰمُوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّى لَا يَخَافُ لَدَىَّ ٱلْمُرْسَلُونَ ﴿١٠﴾

११. लेकिन जो लोग ज़ुल्म करें, फिर उस के बदले नेकी करें उस बुराई के पीछे, तो मैं भी माफ़ करने वाला रहम करने वाला हूँ ।

إِلَّا مَن ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًۢا بَعْدَ سُوٓءٍ فَإِنِّى غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾

१२. और अपना हाथ अपनी जेब (गिरेबान) में डाल वह सफ़ेद (और रौशनी वाला) होकर निकलेगा बिना किसी रोग के । (तू) नौ निशानियाँ लेकर फ़िरऔन और उस के पैरोकारों के पास (जा) बेशक वह फ़ासिकों का गुट है ।

وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِى جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ ۖ فِى تِسْعِ ءَايَٰتٍ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِۦٓ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَوْمًا فَٰسِقِينَ ﴿١٢﴾

---

[1] यह उस समय की घटना (वाक़ेआ) है जब आदरणीय (हज़रत) मूसा मदयन से अपनी पत्नी को साथ लेकर वापस लौट रहे थे, रात के अंधेरे में रास्ते का ज्ञान (इल्म) नहीं था और सर्दी से बचाव के लिए आग की ज़रूरत थी ।

[2] यहाँ अल्लाह की बड़ाई और पकीज़गी का मतलब यह है कि इस आसमानी पुकार से यह न समझ लिया जाये कि इस आग या पेड़ों में अल्लाह ने प्रवेश किया हुआ है, जिस तरह बहुत से मूर्तिपूजक समझते हैं, यह सत्य प्रदर्शन (मुशाहिदा) की एक क़िस्म है जिससे नबूअत के शुरू में नबियों को आम तौर पर सुशोभित (सरफ़राज़) किया जाता है, कभी फ़रिश्ते के ज़रिये और कभी ख़ुद अल्लाह तआला अपनी तजल्ली और ख़ुद बात से, जैसाकि मूसा के साथ घटित हुआ ।

[3] इस से मालूम हुआ कि पैग़म्बर को छिपी बातों का इल्म नहीं होता, वरना मूसा अपने हाथ की लाठी से न डरते दूसरी बात यह कि पैग़म्बर को भी प्राकृतिक (फ़ितरी) डर हो सकता है क्योंकि वह भी तो एक इंसान ही होते हैं ।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑬

१३. इसलिए जब उन के पास आँखें खोल देने वाले हमारे मोजिज़े पहुँचे तो वह कहने लगे कि यह तो साफ (निरा) जादू है।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ⑭

१४. और उन्होंने इंकार कर दिया, अगरचे उन के दिल यक़ीन कर चुके थे केवल ज़ुल्म और घमण्ड के कारण। अत: देख लीजिए उन फ़सादियों का अंजाम क्या कुछ हुआ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑮

१५. और हम ने बेशक दाऊद और सुलेमान को इल्म दे रखा था, और दोनों ने कहा, सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अपने बहुत से ईमानवाले बंदों पर फ़ज़ीलत अता की है।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ⑯

१६. और दाऊद के वारिस सुलेमान हुए,[1] और कहने लगे हे लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखायी गयी है और हम सब कुछ में से दिये गये हैं। बेशक यह बड़ा खुला हुआ (अल्लाह का) उपकार (फ़ज़्ल) है।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ⑰

१७. और सुलेमान के सामने उनकी सभी सेना जिन्नात और इंसान और पक्षी जमा किये गये[2] (हर एक क़िस्म की) अलग-अलग खड़ा कर दिया गया।

---

[1] इस से मुराद नबूअत और मुल्क की विरासत है, जिस के वारिस केवल सुलेमान ही हुए, वरना हज़रत दाऊद के दूसरे पुत्र भी थे, जो इस विरासत से वंचित (महरूम) रहे, वैसे भी नबियों की विरासत इल्म में ही होती है, जो धन-सम्पत्ति वे छोड़ जाते हैं वह दान होता है, जैसाकि नबी ﷺ ने फ़रमाया। (अल-बुख़ारी, किताबुल फ़रायेज और मुस्लिम किताबुल जिहाद)

[2] इस में हज़रत सुलेमान की व्यक्तिगत विशेषता (ज़ाती ख़ुसूसियत) और अहमियत का बयान है, जिस में वह पूरे मानव इतिहास में सब से बेहतर हैं, कि उनका राज्य (मुल्क) केवल इंसानों पर ही नहीं था, बल्कि जिन्नातों,जानवरों और पक्षियों यहाँ तक कि हवा को भी उन के ताबे कर दिया गया था, इस में कहा गया है कि सुलेमान की पूरी सेना यानी जिन्नों, इंसानों और पक्षियों को जमा किया गया, यानी कहीं जाने के लिए यह सेना जमा की गयी।

حَتَّىٰٓ إِذَآ أَتَوۡا عَلَىٰ وَادِ ٱلنَّمۡلِ قَالَتۡ نَمۡلَةٌ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّمۡلُ ٱدۡخُلُوا مَسَٰكِنَكُمۡ لَا يَحۡطِمَنَّكُمۡ سُلَيۡمَٰنُ وَجُنُودُهُۥ وَهُمۡ لَا يَشۡعُرُونَ (18)

१८. जब वे चीटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, हे चीटियो! अपने-अपने घरों में घुस जाओ, (ऐसा न हो कि) वेखवरी (असावधानी) की वजह से सुलेमान और उन की सेना तुम्हें रौंद डाले।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوۡلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوۡزِعۡنِيٓ أَنۡ أَشۡكُرَ نِعۡمَتَكَ ٱلَّتِيٓ أَنۡعَمۡتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَٰلِدَيَّ وَأَنۡ أَعۡمَلَ صَٰلِحًا تَرۡضَىٰهُ وَأَدۡخِلۡنِي بِرَحۡمَتِكَ فِي عِبَادِكَ ٱلصَّٰلِحِينَ (19)

१९. उस की इस वात पर (हज़रत सुलेमान) मुस्करा कर हँस दिये और दुआ करने लगे कि हे रब! तू मुझे तौफ़ीक़ अता कर कि मैं तेरे इन नेमतों (उपकारों) का शुक्रिया अदा करूँ जो तूने मुझ पर नेमत की हैं, और मेरे माता-पिता पर और मैं ऐसे नेकी के काम करता रहूँ जिस से तू ख़ुश रहे, और मुझे अपनी रहमत (कृपा) से अपने नेक बन्दों में शामिल कर ले।

وَتَفَقَّدَ ٱلطَّيۡرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ أَرَى ٱلۡهُدۡهُدَ أَمۡ كَانَ مِنَ ٱلۡغَآئِبِينَ (20)

२०. और आप ने पक्षियों का निरीक्षण (मुआयना) किया और कहने लगे यह क्या वात है कि मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ? क्या हक़ीक़त में वह मौजूद नहीं है?

لَأُعَذِّبَنَّهُۥ عَذَابًا شَدِيدًا أَوۡ لَأَاْذۡبَحَنَّهُۥٓ أَوۡ لَيَأۡتِيَنِّي بِسُلۡطَٰنٍ مُّبِينٍ (21)

२१. बेशक मैं उसे कड़ी सज़ा दूँगा, या उसे ज़िब्ह कर डालूँगा या मेरे सामने कोई उचित (मुनासिब) वजह वताये।

فَمَكَثَ غَيۡرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطتُ بِمَا لَمۡ تُحِطۡ بِهِۦ وَجِئۡتُكَ مِن سَبَإِۭ بِنَبَإٍ يَقِينٍ (22)

२२. कुछ ज़्यादा वक़्त नहीं बीता था कि (आकर) उस ने कहा मैं ऐसी चीज़ की ख़वर लाया हूँ कि तुझे उसकी ख़बर ही नहीं, मैं 'सवा'[1] की एक सच्ची ख़बर तेरे पास लाया हूँ।

إِنِّي وَجَدتُّ ٱمۡرَأَةً تَمۡلِكُهُمۡ وَأُوتِيَتۡ مِن كُلِّ شَيۡءٍ وَلَهَا عَرۡشٌ عَظِيمٌ (23)

२३. मैंने देखा कि उन की वादशाहत एक औरत कर रही है, जिसे हर तरह की चीज़ से कुछ न कुछ अता किया गया है और उसका सिंहासन

[1] सवा एक इंसान के नाम पर एक क़ौम का नाम भी था और एक नगर का भी, यहाँ नगर मुराद है। यह सनआ (यमन) से तीन दिन की यात्रा (सफर) की दूरी पर है और मआरिब यमन के नाम से मशहूर है। (फ़तहुल क़दीर)

भी बड़ा अज़ीम (भव्य) है।

وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَٰنُ أَعْمَٰلَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿24﴾

२४. मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हुए पाया, शैतान ने उनके काम उन्हें भले करके दिखाकर सच्चे रास्ते से रोक दिया है, इसलिए वे हिदायत पर नहीं आते।

أَلَّا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمَٰوَٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿25﴾

२५. कि सिर्फ़ उसी अल्लाह को सज्दा करें जो आकाशों और धरती की छिपी चीज़ों को बाहर निकालता है, और जो कुछ तुम छिपा रखते हो और ज़ाहिर करते हो वह सभी कुछ जानता है।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿26﴾ السجدة

२६. (यानी) अल्लाह! उस के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं, वही विशाल (अज़ीम) अर्श का रब है।

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَٰذِبِينَ ﴿27﴾

२७. (सुलेमान ने) कहा कि अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठा है।

اذْهَبْ بِكِتَٰبِي هَٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ﴿28﴾

२८. मेरे इस ख़त को ले जाकर उन्हें दे दे, फिर उन के पास से हट आ और देख कि वे क्या जवाब देते हैं।

قَالَتْ يَٰأَيُّهَا الْمَلَؤُا إِنِّي أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتَٰبٌ كَرِيمٌ ﴿29﴾

२९. वह कहने लगी हे प्रमुखो (सरदारो)! मेरी तरफ़ एक अहम ख़त डाला गया है।

إِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَٰنَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ﴿30﴾

३०. जो सुलेमान की तरफ़ से है, और जो रहम (दया) करने वाले बड़े मेहरबान अल्लाह के नाम से शुरू है।

أَلَّا تَعْلُوا عَلَيَّ وَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿31﴾

३१. यह कि तुम मेरे सामने सरकशी मत करो और मुसलमान बनकर मेरे पास आ जाओ।

قَالَتْ يَٰأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّىٰ تَشْهَدُونِ ﴿32﴾

३२. उस ने कहा हे मेरे दरबारियो! तुम मेरी इस समस्या में मुझे मश्विरा दो, मैं किसी बात का आख़िरी फ़ैसला जब तक तुम्हारी मौजूदगी और राय न हो नहीं किया करती।

قَالُوا نَحْنُ أُولُوا قُوَّةٍ وَأُولُوا بَأْسٍ شَدِيدٍ وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ (33)

३३. उन सभी ने जवाब दिया कि हम मजबूत और ताक़त वाले बहुत लड़ने-भिड़ने वाले हैं, आगे आप को हक़ है आप ख़ुद ही विचार कीजिए कि आप हमें क्या हुक्म देती हैं।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۖ وَكَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ (34)

३४. उसने कहा कि बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे उजाड़ देते हैं, और वहाँ के बाइज़्ज़त लोगों को बेइज़्ज़त करते हैं, और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِم بِهَدِيَّةٍ فَنَاظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُونَ (35)

३५. और मैं उन्हें एक तोहफ़ा भेजने वाली हूँ, फिर देख लूँगी कि सफ़ीर (राजदूत) क्या जवाब लेकर लौटते हैं।[1]

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتُمِدُّونَنِ بِمَالٍ فَمَا آتَانِيَ اللَّهُ خَيْرٌ مِّمَّا آتَاكُم بَلْ أَنتُم بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُونَ (36)

३६. इसलिए (राजदूत) जब (हज़रत) सुलेमान के पास पहुँचा तो आप ने कहा, क्या तुम माल से मुझे मदद देना चाहते हो? मुझे तो मेरे रब ने इस से ज़्यादा दे रखा है जो उस ने तुम्हें दिया है, इसलिए तुम ही अपने तोहफ़े से ख़ुश रहो।

ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُم بِجُنُودٍ لَّا قِبَلَ لَهُم بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُم مِّنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ (37)

३७. जा उनकी तरफ़ लौट जा हम उन के पास ऐसी सेना लायेंगे जिस के सामने आने की उन में ताक़त नहीं और हम उन्हें ज़लील और पराजित करके वहाँ से निकाल बाहर करेंगे।[2]

---

[1] इस से अंदाज़ा हो जायेगा कि सुलेमान कोई दुनियावी राजा हैं या अल्लाह के भेजे हुए नबी हैं, जिसका मक़सद अल्लाह के दीन का प्रभुत्व स्थापित (ग़लबा साबित) करना है, अगर तोहफ़ा क़ुबूल नहीं किया तो बेशक उसका दीन का प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग़) है, फिर हमें भी पैरवी किये बिना कोई उपाय नहीं होगा।

[2] हज़रत सुलेमान केवल मुल्क से सम्बन्धित नहीं थे, अल्लाह के पैग़म्बर भी थे। इसलिए उन की तरफ़ से लोगों को अपमानित करना मुमकिन नहीं था, लेकिन लड़ाई का नतीजा यही होता है क्योंकि लड़ाई नाम ही ख़ून-ख़राबा और बन्दी बनने बनाने का है, और अपमान और अनादर से मुराद यही है, वर्ना अल्लाह के पैग़म्बर लोगों को अचानक लज्जित और ज़लील नहीं करते। जिस प्रकार नबी ﷺ का मुआमला और अच्छा अख़लाक़ लड़ाई के मौक़े पर रहा।

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿38﴾

३८. (आप ने) कहा हे सरदारो! तुम में से कोई है जो उन के मुसलमान होकर पहुँचने से पहले ही उसका सिंहासन मुझे लाकर दे।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿39﴾

३९. एक शक्तिशाली जिन्न कहने लगा, आप के अपने इस जगह से उठने से पहले ही मैं उसे आप के पास ला देता हूँ, यक़ीन कीजिए मैं इसकी ताक़त रखता हूँ और हूँ भी अमानतदार।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ۗ وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ﴿40﴾

४०. जिस के पास किताब का इल्म था वह बोल उठा कि आप पलक झपकायें उस से भी पहले मैं उसे आप के पास पहुँचा सकता हूँ।[1] जब आप ने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे यह मेरे रब का उपकार (फ़ज़्ल) है, ताकि वह मुझे परखे कि मैं शुक्रिया अदा करता हूँ या नाशुक्री। शुक्रिया अदा करने वाला अपने फ़ायदे के लिए ही शुक्रिया अदा करता है, और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बेनियाज़ और महान (मेहरबान) है।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿41﴾

४१. हुक्म दिया कि उस के सिंहासन में कुछ बदलाव कर दो, हम देखेंगे कि यह रास्ता पा लेती है या उन में से होती है जो रास्ता नहीं पाते।

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ۗ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿42﴾

४२. फिर जब वह आ गयी तो उस से पूछा गया कि ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने जवाब दिया कि यह जैसाकि वही है। हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया था और हम मुसलमान थे।

---

[1] यह कौन इंसान था जिस ने यह कहा, यह किताब कौन सी थी, और यह इल्म क्या था जिसकी ताक़त पर यह दावा किया गया? इस में मुफ़स्सिरों के कई क़ौल हैं, इन तीनों की पूरी हक़ीक़त तो अल्लाह तआला ही जानता है। यहाँ क़ुरआन करीम के लफ़्ज़ों से जो मालूम होता है, वह इतना ही है कि वह कोई इंसान ही था, जिसके पास अल्लाह की किताब का इल्म था, अल्लाह तआला ने मोजिज़ा और अप्राकृतिक रूप (ग़ैरफ़ितरी) से उसे यह ताक़त अता की कि पलक झपकते ही वह सिंहासन ले आया।

وَصَدَّهَا مَا كَانَت تَّعْبُدُ مِن دُونِ اللَّهِ ۖ إِنَّهَا كَانَتْ مِن قَوْمٍ كَافِرِينَ (43)

४३. और उसे उन्होंने रोक रखा था जिन की वह अल्लाह के सिवाय पूजा करती रही थी। बेशक वह काफ़िर लोगों में से थी।

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَن سَاقَيْهَا ۚ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّن قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (44)

४४. उससे कहा गया कि महल में चली चलो जिसे देखकर यह समझकर कि जलाशय (हौज़) है उस ने अपनी पिंडलियाँ खोल दी, फ़रमाया यह तो शीशे से बना हुआ है, कहने लगी मेरे रब! मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया। अब मैं सुलेमान के साथ अल्लाह सारे जहाँ के रब की फ़रमाँबर्दार बनती हूँ।[1]

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَانِ يَخْتَصِمُونَ (45)

४५. और बेशक हम ने 'समूद' की तरफ़ उन के भाई 'स्वालेह' को भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, फिर भी वे दो गुट बनकर आपस में लड़ने लग गये।

قَالَ يَا قَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۖ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ (46)

४६. (आप ने) कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई की जल्दी क्यों मचा रहे हो? तुम अल्लाह (तआला) से माफ़ी क्यों नहीं माँगते? ताकि तुम पर रहम किया जाये।

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَن مَّعَكَ ۚ قَالَ طَائِرُكُمْ عِندَ اللَّهِ ۖ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ (47)

४७. (वे) कहने लगे कि हम तो तुझ से और तेरे साथियों से अपशगुन (बदशगूनी) ले रहे हैं, (आप ने) जवाब दिया कि तुम्हारा अपशगुन अल्लाह के पास है, बल्कि तुम तो इम्तेहान में पड़े हुए लोग हो।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ (48)

४८. इस नगर में नौ (मुखिया) इंसान थे जो धरती में फ़साद फैला रहे थे और सुधार नहीं करते थे।

---

[1] महारानी सबा (बिलक़ीस) के मुसलमान होने के बाद क्या हुआ? क़ुरआन में या किसी सहीह हदीस में इसकी तफ़सीली जानकारी नहीं मिलती, तफ़सीरी रिवायत में ज़रूर मिलता है कि उन का आपस में विवाह हो गया था, लेकिन जब क़ुरआन और हदीस इस विषय में ख़ामोश है तो इस बारे में ख़ामोश रहना ही बेहतर है।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿49﴾

४९. उन्होंने आपस में अल्लाह की क़सम खाकर अहद (प्रतिज्ञा) किया कि रात ही को 'स्वालेह' और उस के परिवार वालों पर हम छापा मारेंगे, और उस के उत्तराधिकारी (वली) से कह देंगे कि हम उस के परिवार के क़त्ल के वक़्त मौजूद न थे, और हम सच बोल रहे हैं।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿50﴾

५०. और उन्होंने चाल चली और हम ने भी और वह उसे समझते ही न थे।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿51﴾

५१. अब देख लो कि उनकी साज़िश (षड्‌यन्त्र) का नतीजा (परिणाम) क्या हुआ? हम ने उन को और उन की क़ौम को सभी को हलाक कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿52﴾

५२. यह हैं उन के घर जो उन के ज़ुल्म की वजह से उजड़े पड़े हैं, जो लोग इल्म रखते हैं उन के लिए उस में बड़ी निशानी है।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿53﴾

५३. और हम ने उन को जो ईमान लाये थे, और नेक काम करते थे बाल-बाल बचा लिया।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿54﴾

५४. और लूत की (चर्चा कर) जबकि उस ने अपनी क़ौम से कहा कि देखने-भालने के बावजूद भी तुम कुकर्म (बदकारी) कर रहे हो?

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿55﴾

५५. यह क्या बात है? कि तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के पास काम वासना (शहवत) से आते हो? सच यह है कि तुम बड़ी जिहालत कर रहे हो।